an>

Title: Need to make available pastures for bovine population in the country.

डॉ. वीरेन्द्र कुमार (टीकमगढ़) ः हमारे देश में लगभग हर एक क्षेत्र के लिए कोई न कोई रणनीति है लेकिन घास के मैदानों के संबंध में यह बात लागू नहीं होती। आज देश भर में गोचर भूमि लगातार कम होती जा रही है तथा देश के अधिकांश स्थानों पर बाहुबलियों ने इस भूमि पर अतिक्रमण किया हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप जब गायें भोजन की तलाश में विचरण करती हैं तथा चारागाहों के अभाव में भोजन के लिए भटकते हुए सड़कों पर आ जाती हैं तो वे अक्सर दुर्घटनाओं का शिकार हो जाती हैं। हमारे देश की सनातन संस्कृति में गाय को माता का स्थान दिया गया है। ऐसे में चारागाहों के अभाव में गौवंश का इस तरह काल कलवित होना अत्यंत दुःख एवं चिंता का विषय है।

आज देश में घास के मैदानों के घटते आकार और घासों की गुणवत्ता में आई गिरावट चिंता का विषय है, क्योंकि देश के ज्यादातर छोटे एवं पिछड़े किसान और भूमिहीन लोग अपनी जीविका के लिए पशुपालन पर ही निर्भर रहते हैं। ऐसे में चारागाहों और घास के मैदानों में सुधार के उपाय करने के लिए राज्यों को भी अवश्य आगे आना चाहिए क्योंकि देश के अधिकांश राज्यों की आबादी अपनी आजीविका के लिए चारागाह आधारित पशुपालन पर निर्भर है तथा कृषि क्षेत्र के कुल सकल घरेलू उत्पाद का करीब 30 प्रतिशत हिस्सा पशुपालन क्षेत्र से आता है।

मेरा इस विषय में सरकार से आग्रह है कि वह इस संबंध में नीतिगत विसंगतियों पर तत्काल ध्यान देकर तथा राज्यों के साथ समन्वय स्थापित कर गोचर भूमि को अतिक्रमण से मुक्त कराने हेतु तत्काल ठोस उपाय करे, जिससे देश में गौवंश की रक्षा हो सके तथा पशुपालन व्यवसाय को प्रोत्साहन मिल सके।